कुण्डली मिलान

- करुणा शर्मा

सर्वप्रथम मैं अपने **श्रद्धेय गुरू श्री के.एन. राव जी** की आभारी हूँ जिनके द्वारा संगठित श्रेष्ठ नवरत्नरूपी अध्यापकों के मार्गदर्शन में हुए शोध से हमें जीवन की कई विसंगतियों को समझने का सुअवसर प्राप्त होता है।

कुंडली-मिलान में प्रयोग किए गए शोध-सूत्रों की चर्चा पहले ही हो चुकी है। अपनी शोध कक्षा में मैंने पारंपरिक मिलान में **'अष्टकूट'** के अलावा **'दशकूट मिलान'** पर भी कार्य किया है इसीलिए कुंडली मिलान के आठ गुणों के साथ 'माहेन्द्र मिलान और पंचरज्जू दोष' का भी विचार कर रही हूं।

यहां मैं दो उदाहरण कुंडलियां प्रस्तुत कर रही हूं। इन दोनों ही कुंडलियों में पारंपरिक मिलान दोषपूर्ण है तब भी उदाहरण-1 में पारंपरिक मिलान सही न होने के बावजूद भी दंपत्ति का में गहरा प्रेम है जबकि उदाहरण-2 में उनका वैवाहिक जीवन अत्यधिक कष्टपूर्ण है तथा आर्थिक तंगी का शिकार है।

अब प्रश्न यह उठता है कि जब पारंपरिक मिलान दोनों में इतना खराब है तो एक दंपत्ति का जीवन सुखी और दूसरे का दु:खी, ऐसा क्यों है?

यही हमारे शोध का विषय भी है। इस प्रश्न के उत्तर में **हमारा मार्गदर्शन आदरणीय प्राध्यापक श्री के.के. जोशीजी** ने यह कहकर किया कि केवल पारंपरिक मिलान दोषपूर्ण होने से अथवा मांगलिक दोष के नाम पर ही किसी के वैवाहिक जीवन का निर्णय करना उचित नहीं है। प्रत्येक युगल-कुंडली के व्यक्तिगत विश्लेषण में जन्मकुंडली के साथ नवांश कुंडली, राशि तुल्य नवांश कुंडली भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है, यदि वह ठीक होगा तो भी वैवाहिक जीवन सुखमय-सफल सिद्ध होगा। इस शोध में प्राप्त 100 युगल-कुंडलियों से भी अधिक में हमने इन सूत्रों की जांच की और उनको सही पाया है।

उदाहरण-1

(1) पारंपरिक मिलान

(क) अष्टकूट मिलान - 22.5 गुण हैं। कुंडली में षडाष्टक(6/8) भकूट दोष है तथा मांगलिक (सप्त) दोष भी है, परंतु यह मंगल स्वराशि का है अत: दोष कम करता है। दशकूट मिलान में माहेन्द्र मिलान नहीं है और रज्जू दोष भी नहीं है। कुल मिलाकर पारंपरिक मिलान पूर्ण संतुष्ट नहीं करते हैं।

(ख) लग्न/चन्द्र/शुक्र मिलान - कुंडली में यह मिलान अनुपस्थित है।

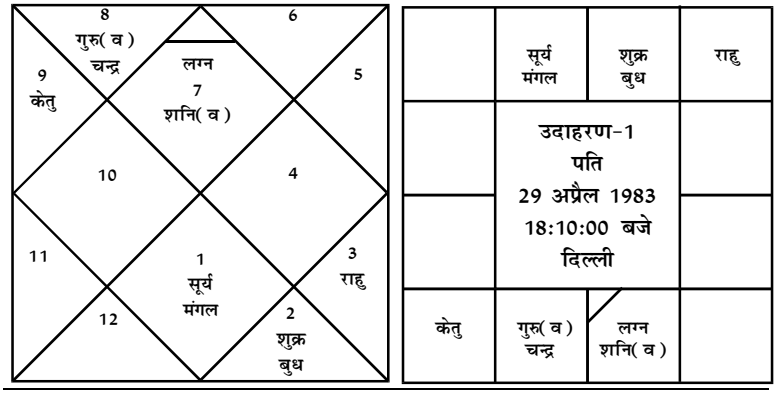

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$06^0 14'$	$15^0 00'$	$12^0 21'$	$23^0 56'$	$01^0 43'$	$15^0 43'$	$25^0 05'$	$06^0 55'$	$02^0 16'$
कारक	मातृ	पुत्र	अमात्य	दारा	भ्रातृ	आत्म	ज्ञाति	

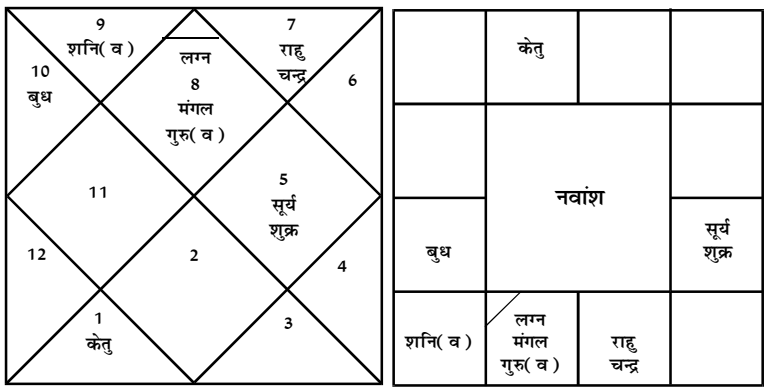

(ग) भाव-मिलान – दोनों की कुंडली में से केवल पुरुष के लग्न में शनि(व) तथा लड़की के लग्न में सूर्य का भाव मिलान है। अत: भाव मिलान दोषपूर्ण है।

– विपरीत भाव में शुभ ग्रह को देखें तो पति के 1/7 अक्ष में पाप ग्रह और पत्नी के 1/7 अक्ष में शुभ ग्रह हैं, जो कि शुभ है।

(2) व्यक्तिगत विश्लेषण

पति का सप्तम भाव, सप्तमेश मंगल व कारक शुक्र की स्थिति –

(क) सप्तम भाव में लाभेश उच्च का सूर्य व स्वगृही मूलत्रिकोणस्थ मंगल स्थित हैं जो विवाह से लाभ को दिखाती है। इन पर लग्नस्थ उच्च के

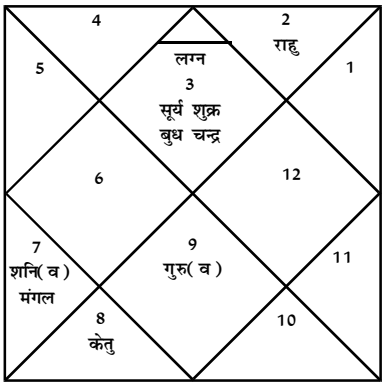

		राहु	लग्न शुक्र सूर्य बुध चन्द्र
	उदाहरण-1 पत्नी 30 जून 1984 05:40:00 बजे दिल्ली		
गुरु(व)	केतु	शनि(व) मंगल	

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$16^0\,50'$	$14^0\,45'$	$26^0\,06'$	$18^0\,45'$	$22^0\,59'$	$14^0\,23'$	$18^0\,37'$	$16^0\,12'$	$12^0\,40'$
कारक	ज्ञाति	आत्म	भ्रातृ	अमात्य	दारा	मातृ	पुत्र	

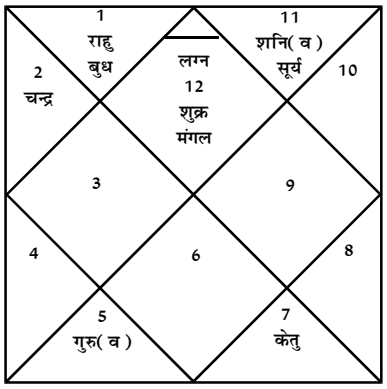

लग्न शुक्र मंगल	राहु बुध	चन्द्र	
शनि(व) सूर्य	नवांश		
			गुरु(व)
		केतु	

तथा योगकारक शनि की दृष्टि है। परन्तु तीनों पापी ग्रह हैं। सप्तम भाव पर तीन पापग्रहों का प्रभाव है। जिसने जातक के वैवाहिक जीवन में तनाव पैदा किया है।

– चतुर्थेश शनि का लग्न से सप्तम भाव पर प्रभाव जातक की माता का उनके वैवाहिक जीवन में अत्यधिक हस्तक्षेप को दर्शाता है।

(ख) सप्तमेश/स्वगृही मंगल का विवाह के कारक शुक्र (लग्नेश/अष्टमेश) से नक्षत्र परिवर्तन जातक का स्त्री के प्रति गहरे आकर्षण को दर्शाता है।

नवांश में, पुनः जन्मांग का सप्तमेश मंगल लग्न स्वराशिस्थ है और मित्र गुरु के साथ है। दोनों की सप्तम भाव पर दृष्टि है।

(ग) कारक शुक्र – जन्मांग में शुक्र स्वराशि के होकर मित्र बुध के साथ हैं। दोनों पर द्वितीय भाव से गजकेसरी योग में स्थित चन्द्रमा व गुरु(व) की दृष्टि है। हालांकि शुक्र पापकर्तरी में और अष्टमस्थं है लेकिन गुरु की दृष्टि सामंजस्य को दिखा रही है।

नवांश में, शुक्र का सप्तमेश होकर दशम भाव में दशमेश सूर्य के साथ होना पत्नी का कार्यक्षेत्र में सहयोग तथा उन्नति को दिखाता है।

(घ) राशि तुल्य नवांश– (अ) लग्न मे चन्द्रमा है। चन्द्रमा तथा सप्तम भाव दोनों राहु–केतु अक्ष में पीड़ित हैं।

(ब) सप्तमेश मंगल अपने से अष्टम भाव में वक्री गुरु के साथ है, शुभ ग्रह के साथ है।

(स) कारक शुक्र, एकादश भाव में एकादशेश सूर्य के साथ है जो नौकरी/व्यवसाय में पत्नी के सहयोग को दिखाता है।

पत्नी का सप्तम भाव, सप्तमेश गुरु, कारक शुक्र की स्थिति –

(क) सप्तम भाव – सप्तम भाव पर लग्न से चार ग्रहों (सूर्य, बुध, शुक्र, चन्द्र) तथा शनि व गुरु का संयुक्त प्रभाव है। इस प्रकार से सप्तम भाव पर छः ग्रहों का प्रभाव, पत्नी का अपने पति के प्रति विशेष आकर्षण व अधि पत्य को दर्शाता है। लग्न सहित दो ग्रह, सूर्य व शुक्र तथा पंचमस्थ शनि व

मंगल सभी राहु के नक्षत्र में हैं जो द्वादश भाव में है। अत: पत्नी का स्वभाव व जीवन के सभी प्रयास राहु-शनिवत होंगे।

(ख) सप्तमेश गुरु का स्वराशिस्थ होना पत्नी को निष्ठावान बनाता है। **पाराशरजी के अनुसार** स्वराशिस्थ सप्तमेश गुरु सुन्दर, संपत्तिवान तथा सच्चे अर्थों में साथ देने वाले पति का सुख प्रदान करता है। गुरु (14^0 23') व तृतीयेश सूर्य (14^0 45') की अंशात्मक युति पति को प्रतिष्ठा व सम्मान की प्राप्ति के अतिरिक्त पति पर अधिपत्य को भी दर्शाती है।

नवांश में, जन्मकुंडली के सप्तमेश गुरु छठे भाव में होकर द्वादशेश शनि व सूर्य से भी प्रभावित हैं। नवांश का सप्तमेश बुध भी 2/8 अक्ष में राहु-केतु परिधि में है।

(ग) कारक शुक्र - जन्मकुंडली में लग्नस्थ शुक्र मित्र राशि में लग्नेश बुध सहित दो अन्य ग्रहों सूर्य व चन्द्र के साथ है और सप्तम भाव को देखता है। शुक्र (18^0 37') व मंगल (18^0 45') की अंशात्मक युति भी प्रेमोद्रेक संबंध देती है। कारक पर इतने ग्रहों का प्रभाव तथा कारक के नक्षत्रेश राहु का द्वादश में होना, जातिका के विदेश में या विदेशी कंपनी में कार्य करने से भाग्योदय को दर्शाता है।

नवांश में, कारक शुक्र उच्च का होकर लग्न में नवमेश मंगल से युतियुक्त हैं। दोनों की सप्तम भाव पर दृष्टि है और कोई अशुभ प्रभाव भी नहीं है।

(घ) पत्नी का राशि तुल्य नवांश - लग्न व सप्तम भाव में कोई ग्रह नहीं है। सप्तमेश गुरु पर सूर्य व शनि की दृष्टी है। सप्तम भाव पर सप्तमेश गुरु की शुभ दृष्टि भी है।

विशेष - पति व पत्नी दोनों के सप्तमेश जन्मकुंडली में सप्तम भाव में ही स्थित हैं लेकिन पत्नी की कुंडली के सप्तमेश पर छ: ग्रहों का प्रभाव है।

(3) विवाह के समय दशा (30 नवम्बर, 2007)

(क) पति की विंशोत्तरी दशा **केतु/शुक्र/बुध** की थी। महादशानाथ केतु तृतीय भाव में हैं। केतु के राशीश गुरु की अंतर्दशा/ प्रत्यंतरदशानाथ शुक्र व

बुध पर पूर्ण दृष्टि है।

नवांश में, महादशानाथ केतु मेषस्थ छठे भाव में हैं जो जन्मांग के सप्तम भाव की राशि है और राशीश मंगल की लग्न से सप्तम भाव पर दृष्टि है। अंतर्दशानाथ/कारक शुक्र, नवांश के सप्तमेश हैं। प्रत्यंतरदशानाथ बुध का सप्तम भाव/सप्तमेश मंगल के साथ कोई सीधा संबंध नहीं है लेकिर्न विवाह के कारक शुक्र के साथ हैं। नवांश व जन्मांग दोनों में कारक शुक्र पर कोई दुष्प्रभाव नहीं है।

दोहरा गोचर– विवाह के दिन गुरु का तृतीयस्थ धनु राशि में महादशानाथ केतु पर गोचर था और वहां से यह सप्तम भाव व जन्मकालीन सप्तमेश मंगल को भी प्रभावित कर रहे थे। एकादश भाव में गोचरस्थ शनि लग्न तथा कारक/अंतर्दशानाथ शुक्र तथा प्रत्यंतरदशानाथ बुध को प्रभावित कर रहे थे।

(ख) पत्नी की विंशोत्तरी दशा शनि/राहु/शनि की थी। महादशा/प्रत्यंतरदशानाथ शनि की सप्तम भाव व सप्तमेश गुरु पर दृष्टि थी। शनि अंतर्दशानाथ राहु के नक्षत्र में हैं जो द्वादशस्थ है। राहु के राशीश शुक्र लग्न से सप्तम भाव व सप्तमेश गुरु दोनों को प्रभावित कर रहे हैं।

नवांश में, शनि द्वादश भाव में है और वहां से नवांश के सप्तमेश बुध व अंतर्दशानाथ राहु को प्रभावित कर रहे हैं।

दोहरा गोचर– गोचर में सिंहस्थ शनि की जन्मकालीन महादशा/प्रत्यंतरदशानाथ शनि तथा अंतर्दशानाथ राहु पर दृष्टि थी। धनु में गोचरस्थ गुरु सप्तम भाव व सप्तमेश/जन्मकालीन गुरु तथा लग्न को प्रभावित कर रहे थे।

विशेष बिन्दु – दोनों के जन्मकालीन लग्न तथा शनि समान अंशों पर हैं। दोनों के शनि उच्च के हैं। अतः उनके व्यक्तित्व शनि से प्रभावित है।

निष्कर्ष – एक का विवाह दशा छिद्र में और दूसरे का छिद्र दशा में हुआ है। कुंडली में गुण मिलान सामान्य हैं और मांगलिक दोष भी हैं लेकिन व्यक्तिगत विश्लेषण में दोनों की कुंडली में सप्तम भाव/सप्तमेश की स्थिति अच्छी है और कारक शुक्र भी शुभ प्रभाव में है। जिसके कारण घर में आए दिन के झगड़ों के बावजूद भी इनका वैवाहिक सुख बना हुआ है। आने वाली दशा दोनों के लग्नेश की है पुरुष की शुक्र तथा स्त्री की बुध की जो इनके वैवाहिक जीवन के लिए एक शुभ संकेत है।

उदाहरण-2

आइए अब उदाहरण-2 की कुंडलियों को देखें। इनका विवाह 27 जनवरी 1991 को हुआ था। इनकी दो संतान, एक बेटा-बेटी है। विवाह के 20 वर्ष बाद भी इनके जीवन में स्थिरता तो दूर की बात है यह जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं के लिए भी जूझ रहे हैं, जिसके कारण इनका परिवार भारी मानसिक संताप से गुजर रहा है। 1999 से पुरुष के मानसिक अवसाद का शिकार होने के कारण इनकी नौकरी छूट गई और तब से आज तक यह बेराजगार हैं। इनकी पत्नी किसी तरह छोटे-मोटे घरेलू काम-काज के द्वारा जीवनयापन कर रही हैं।

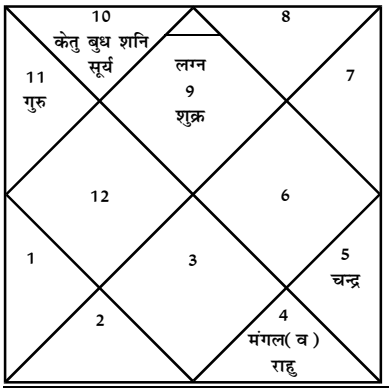

गुरु	उदाहरण-2 पति 11 फरवरी 1963 04:00:00 बजे दिल्ली		मंगल(व) राहु
शनि बुध केतु सूर्य			चन्द्र
लग्न शुक्र			

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$07^0\,50'$	$28^0\,08'$	$24^0\,37'$	$19^0\,04'$	$02^0\,14'$	$24^0\,10'$	$12^0\,13'$	$21^0\,22'$	$06^0\,13'$
कारक	आत्म	अमात्य	पुत्र	दारा	भ्रातृ	ज्ञाति	मातृ	

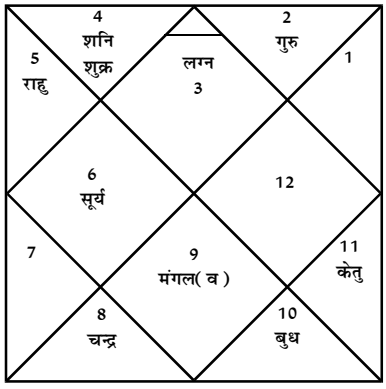

		गुरु	लग्न
केतु	नवांश		शनि शुक्र
बुध			राहु
मंगल(व)	चन्द्र		सूर्य

(1) पारंपरिक मिलान में -

(क) अष्टकूट मिलान - मात्र 14.5 गुण मिलते हैं जो कि सामान्य से बहुत कम हैं। साथ ही कुंडली में - (क) स्थूल नाड़ी दोष है जिसने जातक को स्वास्थ्य संबंधी समस्या दी, (ख) द्वि-द्वार्दश (2/12) भकूट दोष ने वित्तीय संकट दिया तथा (3) मांगलिक (अष्टम) दोष ने कई उतार-चढ़ाव दिए। अतः पारंपरिक मिलान दोषपूर्ण है। अन्य मिलान में.....

(ख) लग्न/चन्द्र/शुक्र मिलान - कुंडली में पुरुष कुंडली की चन्द्र राशि सिंह, स्त्री की कुंडली का 1/7 अक्ष बनी है, जो शुभ है।

(ग) भाव-मिलान - विवाह से संबंधित भावों में कोई समान पीड़ा नहीं हैं।

- विपरीत भाव स्थिति को देखें तो पुरुष की कुंडली का 2/8 अक्ष बहुत पीड़ित है जबकि स्त्री की कुंडली के 2/8 अक्ष पर तीन नैसर्गिक शुभ ग्रहों का प्रभाव है जो राहत दे रहा है।

(2) व्यक्तिगत विश्लेषण

पति का सप्तम भाव, सप्तमेश बुध तथा कारक शुक्र की स्थिति -

(क) सप्तम भाव - सप्तम भाव नैसर्गिक शुभ ग्रह शुक्र व गुरु से दृष्ट है।

(ख) सप्तमेश बुध - बुध द्वितीय भाव में विच्छेदकारी ग्रह सूर्य-शनि के साथ राहु-केतु परिधि में तथा अष्टमस्थ नीच के मंगल सहित पांच ग्रहों से पापाक्रान्त होकर पत्नी के लिए मारक तथा कुत्सिक विचारों का प्रतीक भी है। सप्तमेश व द्वितीयेश का संबंध पाप प्रभाव में हो तो नीचवृत्ति का बनाता है।

सर्वार्थ चिंतामणि के अनुसार द्वितीय भाव में पाप ग्रहों की बहुलता हो, द्वितीयेश व लग्नेश हीनबली होकर पापग्रह वीक्षित हो तो जातक को जीवन में बहुत कष्टों का सामना करना पड़ता है।

नवांश में, जन्मांग का सप्तमेश बुध अष्टम भाव में अष्टमेश शनि तथा

द्वादशेश शुक्र से दृष्ट होकर जन्मांग के योग की पुष्टि कर रहा है। नवांश का सप्तमेश गुरु द्वादश भाव में जन्मांग के अष्टमेश चन्द्र से दृष्ट है।

(ग) कारक शुक्र को देखें तो शुक्र षष्ठेश/एकादशेश होकर लग्न में केतु के नक्षत्र में है और अष्टमेश चन्द्र के नवांश में होकर सप्तम को देखता है जो पत्नी से झगड़ा, असंतोष व दूरी देने में सक्षम है। लेकिन साथ में पुष्कर नवांश में स्थित लग्नेश/चतुर्थेश गुरु की भी सप्तम भाव पर दृष्टि है जो बचाव कर रही है।

नवांश में, शुक्र द्वितीय भाव में अष्टमेश शनि तथा षष्ठेश मंगल से दृष्ट होकर विवाह की असफलता को दर्शाता है।

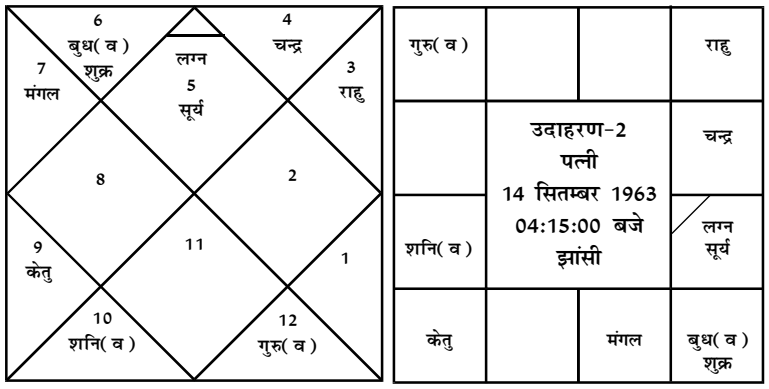

लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
$02^0\,39'$	$27^0\,03'$	$10^0\,38'$	$07^0\,41'$	$09^0\,11'$	$24^0\,09'$	$01^0\,06'$	$24^0\,14'$	$25^0\,21'$
कारक	आत्म	मातृ	ज्ञाति	पुत्र	भ्रातृ	दारा	अमात्य	

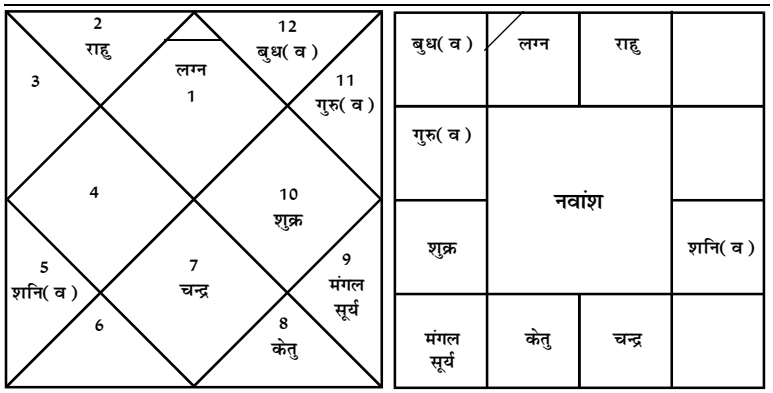

(घ) पति का राशि तुल्य नवांश - लग्न से द्वादशेश मंगल की सप्तम भाव पर दृष्टि है। सप्तमेश बुध अपने से अष्टम में गया है। कारक शुक्र भी अष्टम भाव में शत्रु राशि में द्वादशेश मंगल से पीड़ित है।

विशेष - इस तरह से जन्मांग, नवांश तथा राशि तुल्य नवांश सभी में सप्तमेश का 6/8/12 भावों से संबंध बना हुआ है जो निरंतर जीवन में असंतुष्टि, असफलता, वाणी में कटुता, क्रोध, अचानक दुर्घटना व मानहानि को दिखाता है।

पत्नी का सप्तम भाव, सप्तमेश शनि तथा कारक शुक्र की स्थिति -

(क) सप्तम भाव - लग्नेश सूर्य की सप्तम भाव पर दृष्टि जो शुभ है।

(ख) सप्तमेश शनि - शनि लग्न से छठे तथा सप्तम से द्वादश में स्वगृही है और द्वादशेश चन्द्र से दृष्ट है। लग्नेश सूर्य व सप्तमेश शनि कुंडली में षडाष्टक हैं। साथ ही शनि पर तृतीयस्थ योगकारक मंगल की दृष्टि जातिका के द्वारा अपने पति के लिए भाग्य व घर के सुख देने के प्रयास को दर्शाती है।

नवांश में, जन्मकुंडली का सप्तमेश शनि त्रिकोणस्थ होकर गुरु से दृष्ट हैं। यह शुभ है।

(ग) कारक शुक्र - विवाह का कारक शुक्र द्वितीय भाव में द्वितीयेश बुध के साथ नीचभंग योग में हैं। कालपुरुष कुंडली में शुक्र का छठे भाव में बुध की राशि में नीच के होने के कारण विवाह में तनाव-झगड़ा दे सकता है। द्वितीयस्थ शुक्र पर अष्टमस्थ अष्टमेश गुरु की दृष्टि ने परिवार के भरण-पोषण व धन प्राप्ति में उतार-चढ़ाव दिया।

नवांश में, विवाह के कारक शुक्र सप्तमेश होकर दशम भाव में पत्नी की कार्यक्षेत्र में सहायता की पुष्टि करते है। लेकिन शुक्र के राशीश शनि दशम से अष्टम में (पंचम) जाकर पुनः आजीविका में व्यवधान दिखा रहे हैं।

(घ) पत्नी का राशि तुल्य नवांश - सप्तमेश शनि की लग्न से सप्तम

भाव पर दृष्टि है। यह शनि षष्ठेश भी हैं। सप्तम भाव में अष्टमेश गुरु स्थित हैं। सप्तमेश/षष्ठेश शनि (24^0 14') व अष्टमेश गुरु (24^0 09') समान अंशों पर स्थित हैं और राहु-केतु से निकटतम अंशों पर भी हैं जो पति व संतान से कष्ट को दिखाती हैं।

बंधन योग - स्त्री की कुंडली में **3/11** अक्ष का बंधन योग है और दोनों भावों में अशुभ ग्रह मंगल-राहु दिखाते हैं कि जीवन में प्रयास करने पर भी लाभ उम्मीद से कम होगा।

दूसरा बंधन योग 6/8 भाव का है। दोनों में स्वराशि के शनि व गुरु हैं। षष्ठेश शनि की अष्टमेश गुरु पर दृष्टि पुनः संघर्ष, किसी असाध्य रोग व रुकावटों को दर्शाता है।

3. विवाह के समय दंपत्ति की दशा व गोचर (27 जनवरी, 1991)

(क) पति की विंशोत्तरी दशा राहु/राहु/शुक्र की थी - महादशा/अंतर्दशानाथ राहु अष्टम में है। राहु से सप्तम में बुध हैं। प्रत्यंतरदशानाथ शुक्र लग्न में हैं और वहां से सप्तम भाव को देखते हैं। दोनों राहु/शुक्र 6/8 हैं।

गोचर में - द्वितीय भाव में मकरस्थं राहु व शनि का सप्तमेश बुध पर गोचर था। कर्कस्थ गुरु का महादशानाथ/जन्मकालीन राहु पर गोचर था और वहां से सप्तमेश बुध को भी प्रभावित कर रहे थे। प्रत्यंतरदशानाथ/कुम्भस्थ शुक्र का लग्नेश गुरु पर गोचर था।

(ख) पत्नी की विंशोत्तरी दशा केतु/सूर्य/शनि की थी - 5/10 अक्ष पर महादशानाथ केतु की स्थिति विवाह देने में सक्षम है। केतु के राशीश गुरु पर छठे भाव से सप्तमेश/प्रत्यंतरदशानाथ शनि की दृष्टि थी। अंतर्दशानाथ सूर्य लग्नेश होकर लग्न से सप्तम भाव को देखते हैं।

गोचर में - महादशानाथ केतु व उनके राशीश गुरु का कर्क राशि में जन्मकालीन चन्द्रमा पर गोचर था और वहां से जन्मकालीन प्रत्यंतरदशानाथ/सप्तमेश शनि को भी देख रहे थे। गोचर के सूर्य व शनि जो अंतर्दशा/प्रत्यंतर दशानाथ

हैं दोनों का छठे भाव मकर राशि में स्थित जन्मकालीन/सप्तमेश शनि पर गोचर था और कारक शुक्र स्वयं सप्तम भाव में कुंभ राशि में गोचर कर रहे थे।

निष्कर्ष – दोनों उदाहरण कुंडलियों में पारंपरिक मिलान दोष पूर्ण है और मांगलिक दोष भी है लेकिन पहले युगल का व्यक्तिगत विश्लेषण सही होने से इनका वैवाहिक जीवन सुखी है जबकि दूसरे युगल का व्यक्तिगत विश्लेषण बहुत खराब है जिसके कारण उनका जीवन दु:खों से घिरा हुआ है।

*****